IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कार्यरत और अकार्यरत माताओं की बालिकाओं के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

डॉ0 श्याम सुन्दर कुशवाहा
सहायक आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग
वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी (उ0प्र0)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में इस विषय पर अध्ययन किया गया है कि कार्यरत मातायें जब कार्य पर चली जाती हैं तब उनकी बालिकाओं के आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है? न्यादर्श हेतु आगरा शहर के कई माध्यमिक विद्यालयों से 150 कार्यरत एवं 150 अकार्यरत माताओं की बालिकाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि से किया गया। आकांक्षा स्तर के मापन के लिए डॉ0 एम० ए० शाह एवं डॉ0 महेश मार्गव द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए कक्षा 10 के प्राप्तांकों को लिया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी-परीक्षण एवं सह-सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है। परिणाम दर्शाते हैं कि कार्यरत व अकार्यरत माताओं के बालिकाओं की आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है जबकि शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मुख्य शब्द :- कार्यरत और अकार्यरत माता, आकांक्षा स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावना

भारतीय समाज की परम्परा के प्रतिकूल कार्यरत महिलाओं की संख्या में दिन-प्रतिदिन अद्भुत वृद्धि दृष्टिगोचर हो रही है। इस स्थिति ने कार्यरत माताओं के बालक-बालिकाओं की घर में देखभाल करने की समस्या को जन्म दिया है। संयुक्त परिवार के टूटने से इस प्रकार की समस्याओं में वृद्धि हुई है जिसने बालक बालिकाओं में असुरक्षा की भावना को उत्पन्न कर दिया है।

आधुनिक युग में भारत वर्ष में सामाजिक एवं आर्थिक दशा के परिवर्तनों तथा शिक्षा के उच्च स्तर ने महिलाओं को घर से बाहर निकालकर वैतनिक तथा अवैतनिक रूप में उत्तरदायित्व ग्रहण करने में सहायता प्रदान की है। यातायात के आधुनिक साधनों ने भी सामाजिक-आर्थिक स्तर एवं मानव जीवन के दूसरे क्षेत्रों में एक नई दिशा प्रदान की है। आज महिलायें घर से बाहर जाकर उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य करती है।

जब महिलायें घर से बाहर कार्यरत रहती हैं तो अपनी परिस्थिति के अनुसार बालक बालिकाओं की देखभाल का भार प्रायः नौकर अथवा पड़ौसी या सगे सम्बन्धियों को सौंप देती हैं। जो बालक जीवन के किसी अन्य प्रतिमान के

अभ्यस्त नहीं होते वे इस प्रकार की स्थिति में समायोजित हो जाते हैं। यदि घर मैं माता अथवा प्रतिस्थापित व्यक्ति का नियंत्रण नहीं होता तो कार्यरत माता के बालक को जीवन के विभिन्न प्रतिमानों पर समायोजन करना आवश्यक हो जाता है और जब इन प्रतिमानों में कुछ परिवर्तन होते हैं तो बालक के व्यक्तित्व पर भी प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समय में आकांक्षा की प्राप्ति न होना बालक के व्यक्तित्व के विकास में बाधक तत्व होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनेक समस्यायें उत्पन्न होती हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उचित अध्ययन के द्वारा ही छात्र उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करता है दूसरी ओर व्यक्ति का आकांक्षा स्तर न केवल यह स्पष्ट करता है कि वह किसी विशेष समय पर क्या है बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि वह भविष्य में क्या करना चाहता है। यह उसके लक्ष्य का मापक है और दूरगामी व्यवहार का महत्वपूर्ण तत्व है। व्यक्ति के आकांक्षा स्तर को जानकर उसके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। बालक के व्यक्तिव्त निर्धारण में भी आकांक्षा स्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अतः वर्तमान में उच्च आकांक्षा स्तर रखने वाले बालकों की यदि शैक्षिक उपलब्धि उच्च नहीं है तो वह अग्रिम शिक्षा या व्यवसायों में प्रवेश नहीं पा सकते हैं, क्योंकि आधुनिक काल में व्यवसाय में चयन करते समय शैक्षिक उपलब्धि का प्रमुख स्थान है। चयन न होने पर बालकों में तनाव बना रहता है तथा उददण्डता की भावना विकसित हो जाती है जिससे वह समाज के लिए हानिकारक हो सकरते हैं। इस सत्य को भी नहीं नकारा जा सकता है कि माता-पिता व बालक-बालिकायें योग्यता से अधिक आकांक्षा रखते हैं और आकांक्षा पूरी न होने पर भग्नाशा होना स्वाभाविक है। अतः शोधकर्ती ने यह अनुभव किया कि इस विषय पर अध्ययन किया जाय कि जब कार्यरत मातायें कार्य पर चली जाती हैं तब उनकी बालक-बालिकाओं के आकांक्षा स्तर एवं उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये-

1. कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
2. कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. कार्यरत व अकार्यरत माताओ की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा स्तर के मध्य सह-सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन हेतु निम्नांकित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया -

1. कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।

अध्ययन प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श हेतु आगरा शहर के कई माध्यमिक विद्यालयों से 150 कार्यरत एवं 150 अकार्यरत माताओं की बालिकाओं का चयन उद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि से किया गया। आकांक्षा स्तर के मापन के लिए डॉ0 एम० ए० शाह एवं डॉ0 महेश मार्गव द्वारा निर्मित आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया गया एवं शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए कक्षा 10 के प्राप्तांकों को लिया गया। संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु टी-परीक्षण एवं सह-सम्बन्ध गुणांक का प्रयोग किया गया है।

परिणाम तथा विवेचन

तालिका-1

कार्यरत एवं अकार्यरत माताओं की बालिकाओं के आकांक्षा स्तर के अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

वर्ग समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात
कार्यरत माताओं की बालिकायें	150	3.013	1.49	2.64*
अकार्यरत माताओं की बालिकायें	150	3.454	1.41	

*.01 स्तर पर सार्थक

तालिका-2

कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर को दर्शाते मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात

वर्ग समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-अनुपात
कार्यरत माताओं की बालिकायें	150	314.47	28.3	.787*
अकार्यरत माताओं की बालिकायें	150	317.17	30.4	

*.05 स्तर पर असार्थक

तालिका-3

कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा-स्तर के मध्य सह-सम्बन्ध

वर्ग समूह	संख्या	सह-सम्बन्ध	परिणाम
कार्यरत माताओं की बालिकायें	150	.87	धनात्मक उच्च सह-सम्बन्ध
अकार्यरत माताओं की बालिकायें	150	.57	धनात्मक मध्य सह-सम्बन्ध

tk¡p

प्रस्तुत तालिका-1 से स्पष्ट है कि अकार्यरत माताओं की बालिकाओं के आकांक्षा स्तर का मध्यमान कार्यरत माताओं की बालिकाओं की अपेक्षा अधिक है। इन दोनों मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की सत्यता ज्ञात करने के लिये टी-अनुपात का मान 2.64 जोकि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना ”कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं के आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नही हैं“ अस्वीकृत होती है।

सम्भवतः इसका कारण यह हो सकता है कि कार्यरत माताओं की बालिकाओं की आकांक्षायें उभर नही पाती है या वह बालिकायें उनकों दबाने का प्रयास करती हैं या फिर वह बालिकायें इस ओर ध्यान नहीं दे पाती क्योंकि माता के कार्यरत होने पर बालिकाओं के ऊपर गृहकार्य का बोझ भी बना रहता है। कार्यरत होने पर मातायें व्यस्त रहती हैं जिससे वह अपनी बालिकाओं को उचित निर्देशन प्रदान नहीं कर पाती तथा उनकी आकांक्षायें दब जाती हैं।

तालिका-2 से स्पष्ट है कि कार्यरत व अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता की जाँच के लिए टी-अनुपात का मान .787 जो कि असार्थक है। अतः अकार्यरत व कार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में अधिक अन्तर नहीं है।

मध्यमान का अन्तर यह प्रदर्शित करता है कि अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है। इसका कारण सम्भवतः यह हो सकता है कि कार्यरत माताओं की बालिकायें अपने अध्ययन के लिये पर्याप्त समय उपलब्ध नहीं कर पाती होगी क्योंकि उनको अध्ययन के अतिरिक्त गृहकार्य की भी देखभाल करनी पड़ती है तथा माताओं की अनुपस्थिति में अगर छोटे भाई बहिन हैं तो उनकी देखभाल या घर में मेहमानों के लिये समय देना पड़ता है। दूसरी ओर अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि सम्भवतः इसलिये अधिक पाई गई क्योंकि बालिकाओं को अपने अध्ययन के लिये पर्याप्त सयम मिल जाता है तथा गृह कार्य से मुक्त रहने पर शारीरिक थकान कम होती है।

तालिका-3 से स्पष्ट है कि कार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा स्तर का सह-सम्बन्ध 0.87 है जो धनात्मक एवं अत्यधिक उच्च है। इससे यह प्रतीत होता है कि जैसे-जैसे परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है वैसे-वैसे बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व आंकाक्षा स्तर भी बढ़ता है। माता के व्यवसाय से उच्च कोटि का व्यवसाय पाने की इच्छा बच्चों में रहती है। समाज में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते हैं जिससे आत्म-निर्भरता की भावना का विकास होता है तथा उनकी आकांक्षाऐ बढ़ती है। भविष्य को सुरक्षित रखने के लिये अधिक से अधिक संघर्ष करते हैं तथा शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाते है।

तालिका-3 से यह भी स्पष्ट है कि अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व अकांक्षा स्तर का सह-सम्बन्ध .57 है जो धनात्मक मध्य श्रेणी का पाया गया। मध्य श्रेणी का सह-सम्बन्ध यह प्रदर्शित करता है कि अकार्यरत माताओं की बालिकाओं की जैसे-जैसे शैक्षिक उपलब्धि बढ़ती है वैसे वैसे आकांक्षा स्तर भी बढ़ता है, लेकिन यह कार्यरत माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा स्तर के मध्य सह सम्बन्ध की मात्रा में कम है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि कार्यरत मातायें बालिकाओं को उचित निर्देशन तथा प्रेरणा प्रदान नहीं कर पाती है और न ही इनको उच्च प्रकार की शैक्षिक सामग्री उपलब्ध हो पाती है जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि व आकांक्षा स्तर को प्रभावित करता है।

सुझाव

माता-पिता के लिये सुझाव-

1. कार्यरत माताओं को चाहिये कि वह कार्य के साथ-साथ बच्चों की प्राथमिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति अवश्य करें। व्यस्तता के साथ-साथ बच्चों को समय-समय पर निर्देशित व प्रेरणा प्रदान करें।
2. कार्यरत माताओं को चाहिये कि वे बालिकाओं को पर्याप्त प्रेम व स्नेह दें क्योंकि स्नेह के अभाव में बालक स्वयं को उपेक्षित समझने लगते हैं।
3. माताओं की बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने के लिये विभिन्न प्रसास करने चाहिये। यदि वह स्वयं शिक्षित है तो घरों पर नयी-नयी पुस्तकों से जानकारी प्राप्त करके अपने बच्चों को उनसे परिचित करा सकती है। बच्चों की क्षमताओं को समझकर अपना व बच्चों का आकांक्षा स्तर उसी के अनुरूप बनायें।

4. कार्यरत माताओं को चाहिये कि वह अपनी बालिकाओं पर गृहकार्य का अधिक भार न डाले तथा सयम निकाल कर कार्य को स्वयं करें। माताओं के कार्यरत होने पर बालिकाओं को घर पर ही अधिक रहना पड़ता है। अतः ऐसी मातायें छुट्टी के समय उनको बाहर के अवसर प्रदान करें या वह स्वयं उनके साथ जावें। जिससे बच्चों को सामाजिक क्रियाकलापों का भी ज्ञान होना तथा वह सामाजिक भी होगीं।
5. मात-पिता का कर्तव्य है कि बच्चों में अनुचित भेदभाव न करें। उनके कार्य के प्रति प्रसंशात्मक दृष्टिकोंण अपनाया जाये। ईष्या व द्वेष को हतोत्साहित किया जाय तथा उनकी क्षमताओं की जानकारी उन्हें दी जाये जिससे वह अपनी क्षमतानुकूल आकांक्षा स्तर का निर्माण कर सकें।

शिक्षकों के लिये सुझाव-

1. बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को अधिक विकसित करने के लिये शिक्षकों को चाहिये कि वे उन्हें प्रयोगशाला, पुस्तकालय तथा विषय से सम्बन्धित अतिरिक्त पुस्तकों का ज्ञान कराये तथा अध्ययन के लिये प्रेरित करें। उनके चतुर्मुखी विकास के लिये समय-समय पर वाद-विवाद, चित्रकला, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद तथा अन्य दूसरी प्रतियोगिताओं के लिए बच्चों को प्रेरित करें।
2. यदि बालक शिक्षा में पिछड़ा हुआ है तो शिक्षकों को चाहिये कि वह शैक्षिक पिछडापन दूर करने के लिये उसके कारणों का पता करें तथा बालक को उचित मार्गदर्षन देने का प्रत्यन करें।
3. किशोरावस्था में शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की प्रत्येक क्रिया का अवलोकन सावधानी पूर्वक किया जाये, जिससे कि बालक के आकांक्षा स्तर के आधार पर उसे शैक्षिक और व्यवसायिक निर्देशन देकर उसके समायोजन में सहायता पहुचायी जा सके।
4. शिक्षक को विद्यार्थियों से उनकी अभिवृत्तियों, रूचियों, योग्यताओं के विषय मे जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। विद्यार्थियों को अत्यधिक उच्च लक्ष्यों का निर्धारण करने के लिये प्रेरित नहीं करना चाहिए।
5. अत्यधिक उच्च लक्ष्यों को विद्यार्थियों के सम्मुख नहीं रखना चाहिये इससे विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर आवश्यकता व उनकी क्षमता से अधिक ऊॅचा हो जाता है जो लक्ष्य प्राप्ति न होने पर असमायोजन को उपन्न करता है।
6. विद्यार्थियों में उपयुक्त आकांक्षा स्तर का विकास करने के लिये विद्यालयों में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं को उन्नत बनाना चाहिये जिससे उनमें बौद्धिक एवं व्यवसायिक चयन के लिये बुद्धिमत्ता पूर्ण आधारशिला को कॉलेज में प्रवेश करने के पूर्व ही स्थापित किया जा सके।

REFERENCES

1. अग्रवाल, जे°सी° (1987). इण्डियन वूमेन एजुकेशन एण्ड स्टेट्स। न्यू देहली: आर्य बुक डिपो।
2. बेस्ट, जे° डब्ल्यू° (1968). रिसर्च इन एजूकेशन। न्यू देहली: विले ईस्टर्न प्राइवेट लिमिटेड।
3. Buch, M.B. (Ed.) (1991). *Fourth Survey of Research in Education*, New Delhi: NCERT.
4. Bisth, G.S. (1992). *A study of the level of educational aspiration in relation to SES and educational achievement*, unpublished Ph.D. Dissertation, Agra University'
5. गुप्ता, मधु (1994). अनुसूचित जाति एवं सवर्ण जाति के प्रथम एवं प्रथमोत्तर शिक्षित पीढ़ी के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कतिपय मनोवैज्ञानिक कारको का तुलनात्मक अध्ययन। अप्रकाशित शोधग्रन्थ (शिक्षा) डी0ई0आई0 विश्वविद्यालय, दयालबाग, आगरा।
6. Bisth, G.S. (1992). *A study of the level of educational aspiration in relation to SES and educational achievement*, unpublished Ph.D. Dissertation, Agra University'
7. Namo Kumari (1990). *A study of the relationship among the level of aspiration, academic achievement and intelligence of High School science Student of Aligarh*, unpublished Ph.D of Agra University